**06-06-2021**

# एनएसआई में बनेगी ‘हर्बल वाटिका’

## पर्यावरण दिवस पर संस्थान में वृक्षारोपण, पानी की खपत से निजात हेतु ‘माडल वाटर मैनेजमेंट’ अपनाएं संस्थान

जेईएनएन

कानपुर। पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग है क्योंकि हम पर्यावरण से है ना की पर्यावरण हमसे पर हमारा समाज पर्यावरण को लेकर बिल्कुल भी जागरुक नहीं है। लोगों में पर्यावरण को लेकर उसी जागरुकता को बढ़ाने हेतु राष्ट्रीय शर्करा संस्थान द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में शुरू किए गए ‘वृक्षारोपण कार्यक्रम’ जिसकी थीम थी ‘वृक्ष हरा, खुशहाल धरा’ को संपन्न किया गया।

### लिक्विड सॉलिड वॉटर मैनेजमेंट तकनीक का हो इस्तेमाल

इस कार्यक्रम के अवसर पर संस्थान में एक ‘हर्बल वाटिका’ बनाने का निर्णय लिया गया जिसकी शुरुआत गिलोय, परिजात, अश्वगंधा, तुलसी एवं एलोवेरा जैसे पौधों को लगाकर की गई। जिसमें संस्थान के अधिकारियों के साथ-साथ कर्मचारियों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

### पोटाश फर्टिलाइजर बनाएं

संस्थान के निदेशक ने पूरे चीनी उद्योग के नाम एक अपील जारी करते हुए ‘लिक्विड सॉलिड वॉटर मैनेजमेंट’ की नई तकनीक को अपनाने की बात कही और उनसे मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने का भी आवाह्न किया। उन्होंने मोलासेस पर आधारित डिस्टिलरीज से निकलने वाले दूषित जल को चीनी मिल से प्राप्त प्रेस मड के साथ मिलाकर ‘बायोकम्पोस्ट’ या ‘पोटाश युक्त फर्टिलाइजर’ बनाने की भी बात कही।

### खाली जमीन पर चीनी मिलें लगाएं सोलर एनर्जी सिस्टम

कार्यक्रम में समाज में ताजे पानी की खपत को देखते हुए एक निर्णय लिया है। इस खपत को कम करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित ‘माडल वाटर मैनेजमेंट’ और ‘रेन वाटर हार्वेस्टिंग’ को अपनाने पर जोर दिया है। और कहा कि अब चीनी मिलें अपने परिसर में उपलब्ध खाली जमीन का उपयोग ‘सोलर एनर्जी सिस्टम’ लगाने के लिए भी कर सकती हैं।

# हर्बल वाटिका में लगाये गिलोय अश्वगंधा, तुलसी व एलोवेरा

कानपुर, 5 जून। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर वृक्षारोपण कार्यक्रम वृक्ष हरा, खुशहाल धरा धीम के साथ सम्पन्न हुआ। संस्थान में हर्बल वाटिका बनाने का निर्णय लिया गया और इसकी शुरुआत गिलोय, परिजात, अश्वगंधा, तुलसी एवं एलोवेरा की पौध लगाकर की गयी। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि समस्त चीनी उद्योग के नाम एक अपील जारी की है कि लिक्विड-सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की नवीन तकनीक अपनाते हुए पर्यावरण की रक्षा के साथ साथ मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने का आह्वान किया। उन्होंने मोलासेस पर आधारित डिस्टिलरीज को जीरो लिक्विड डिस्चार्ज हेतु डिस्टिलरीज से निकलने वाले दूषित जल को चीनी मिल से प्राप्त प्रेस मड के साथ बायो कम्पोज या पोटाश युक्त फर्टिलाइजर बनाने पर बल दिया। ताजे पानी की खपत कम करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित माडल वाटर मैनेजमेंट सिस्टम एवं रेन वाटर हार्वेस्टिंग अपनाने पर जोर दिया। चीनी मिलें अपने परिसर में उपलब्ध खाली जमीन का उपयोग सोलर एनर्जी सिस्टम लगाने क लिए किया जाये।

पौध रोपण करतो निदेशक प्रो नरेन्द्र मोहन।

मारोह, सम्मान

## राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में मनाया गया विश्व पर्यावरण दिवस

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में "विश्व पयाकिरण दिवस" वृक्षारोपण कार्यक्रमृ "वृक्ष हरा, खशुहाल धरा "थीम के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर संस्थान में एक "हर्बल वाटिका" बनाने का निर्णय लिया गया और इसकी शरुआत गिलोय, परिजात, अश्वगधां, तलुसी एवं एलोवेरा पौध लगा कर की गयी। इस कार्यक्रम मे संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक ने समस्त भारतीय चीनी उद्योग के नाम एक अपील जारी करते हुए "Liquid&Solid Waste Management" की नवीन तकनीक अपनाते हए पर्यावरण की रक्षा के साथ साथ उनसे "मल्य वर्धित उत्पाद" बनाने का आह्वान किया। उन्होंने मोलासेस पर आधारित डिस्टिलरीज को "जीरो लिक्विड डिस्चार्ज" हेतु डिस्टिलरीज से निकलने वाले दूषित जल को चीनी मिल से प्राप्त प्रेस मड के साथ मिलाकर "बायो–कम्पोस्ट" या "पोटाश यक्त फर्टिलाइजर" बनाने ने पर बल दिया। उन्होंने ताजे पानी की खपत कम करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित "मॉडल वाटर मैनेजमेंट सिस्टम" एवं "रेन वाटर हार्वेस्टिंग" अपनाने पर जोर दिया। चीनी मिलें अपने परिसर में उपलब्ध खाली जमीन का उपयोग "सोलर एनर्जी सिस्टम" लगाने के लिए भी कर सकती हैं, उन्होंने आगे कहा।

## राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में बनेगी 'हर्बल वाटिका' : राष्ट्रीय

शर्करा संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस पर हर्बल वाटिका बनाने का गया। इसकी शुरुआत गिलोय, पारिजात, अश्वगंधा, तुलसी एवं एलो लगाकर की गई। इसके साथ ही संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने समस्त भारतीय चीनी उद्योग से अपील की कि वे लिक्विड सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की तकनीक अपनाते हुए पर्यावरण की रक्षा के साथ-साथ उनसे मूल्य वर्धित उत्पाद बनाएं। डिस्टलरीज से निकलने वाले दूषित जल को चीनी मिल से प्राप्त प्रेस मड के साथ मिलाकर बायो कंपोस्ट व पोटाश फर्टिलाइजर बनाने का काम करें। उन्होंने पानी की खपत कम करने के लिए मॉडल वाटर मैनेजमेंट सिस्टम एवं रेन वाटर हार्वेस्टिंग को अपनाने पर भी जोर दिया। यह भी कहा कि चीनी मिलें खाली जमीन का उपयोग सोलर एनर्जी सिस्टम के लिए भी कर सकती हैं।

5 / 12

# नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में बनेगी हर्बल वाटिका

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में वृक्ष हरा, खुशहाल धरा थीम पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर इंस्टीट्यूट परिसर में गिलोय, पारिजात, अश्वगंधा, तुलसी और एलोवेरा के पौधे रोपे गए। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि इंस्टीट्यूट परिसर में हर्बल वाटिका बनाने का निर्णय लिया गया है।

इस मौके पर उन्होंने चीनी उद्योग के नाम अपील जारी की। कहा कि तरल और ठोस कचरा निस्तारण तकनीक से पर्यावरण की सुरक्षा करें। कचरे से मूल्य वर्धित उत्पाद बनाएं, जिससे आय बढ़े। मोलासेस पर आधारित डिस्टलरियों में जीरो लिक्विड डिस्चार्ज के लिए कहा। चीनी मिल से निकलने वाली प्रेसमड से बायो कंपोस्ट या पोटाश युक्त फर्टिलाइजर बनाने पर बल दिया। चीनी मिलों में ताजा पानी की खपत कम करने के लिए मॉडल वॉटर मैनेजमेंट सिस्टम और रेन वॉटर हार्वेस्टिंग अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा चीनी मिलें अपने परिसर में सोलर एनर्जी सिस्टम भी लगा सकती हैं।

## पेड़ों का संरक्षण बहुत जरूरी

कानपुर। विश्व पर्यावरण दिवस की थीम पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली है जो आज के पर्यावरण में एक बहुत बड़ी जरूरत बन गई है। दुनिया के 45% वन्यजीव, 12% पौधों की प्रजातियों में कमी आई है। इसलिए जीवन का संतुलन बनाए रखने के लिएपौधों को संरक्षित करना बहुत जरूरी है। यह बात सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कही। शनिवार को उत्तराखंड मुक्त विवि हल्द्वानी की ओर से पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में वह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे।